اکتوبر ۲۰۱۰ء

ماہنامہ شعاعِ عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَکِتَابٌ مُبِینٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

روضۂ امام موسیٰ کاظمؑ و امام محمد تقیؑ ، کاظمین ، عراق

نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

OCTOBER 2010

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-7

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक-4

अक्टूबर - 2010

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
''लखनऊ''

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद

प्रोफ़ेसर अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर, प्रोफ़ेसर सै० इमरान हैदर, मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़्हीब नगरौरी

वार्षिक - 200 रु   मिलने का पता   क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

मजलिसे इदारत

- डॉ० अमानत हुसैन
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- तज़हीब नगरौरी
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः 80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः 60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः 40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः 20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(अक्टूबर 2010ई० शव्वालुल मुकर्रम-ज़ीक़ादतुल हराम 1431हि०)

न० मज़मून व लेखक	पेज
1— **शिया इतिहास की संक्षिप्त रूप रेखा** सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़वी नक़वीता०स०	3
2— **इराक़ की सरज़मीन से अर्ज़े हाल** जनाब शकील हसन शमसी साहब, देहली	8
3— **मुख्य समाचार** इदारा	15

हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ीअ० ने फ़रमायाः-

- जो अपनी ख़्वाहिशों का ग़ुलाम हुआ उसने गोया अपने दुश्मन की ख़्वाहिशों को पूरा किया।
- हरगिज़ लोगों की ख़ुशी के लिए अल्लाह को नाराज़ मत करना और लोगों से क़ुरबत के लिए अल्लाह से दूर मत होना।
- एक दूसरे को तोहफ़ा देकर मुहब्बत बढ़ाओ और जो तुम्हें तोहफ़ा दे तुम भी उसे तोहफ़ा दो।
- आपस में इत्तेहाद क़ायम करने के लिए झूट भी नापसन्दीदा नहीं।
- इल्म हासिल करने में अगर किसी को मौत आ जाए तो वह शहीद की तरह है

शिया इतिहास की संक्षिप्त रूप रेखा

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादकः सै० मुहिब्बुल हसन रिज़वी ''समर'' हल्लौरी

शीईयत का प्रथम युग

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद[स०] के समय से मुसलमानों में शिया और अशिया का कोई मत भेद स्पष्ट न हुआ था। फिर भी स्पष्ट रूप से तीन व्यक्ति पवित्र अहलेबैत (रसूलुल्लाह[स०] के घर वाले जिनमें रसूल की सुपुत्री और उनके पति हज़रत अली[अ०] और उन के दो पुत्र हसन व हुसैन सम्मिलित हैं) के पति मुख्य श्रद्धा रखते हुए प्रतीत होते थे यह सलमान, अबूज़र और मिक़दाद थे जो शिया की पदवी सहित मुख्य रूप से प्रसिद्ध हुए। रसूल[स०] की मृत्यु के पश्चात उस समय जब कि संसार (समस्त इस्लामी समाज) राजनीत की धार में प्रवाहित था और रसूल[स०] के घर वालों से दूर हट रहा था, यही वह लोग थे जो एक क्षण के लिए भी रसूल तथा अहलेबैते रसूल[अ०] पर अविश्वास न किया और पैग़म्बर साहब के साथ किए हुए उस प्रण पर क़ायम रहे जो ग़दीरे ख़ुम (एक विशाल मैदान जहाँ अन्तिम हज के अवसर पर रसूल[स०] ने मुसलमानों के एक बड़े सम्मेलन में स्पष्ट रूप से अली[अ०] को अपना सहायक तथा जानशीन घोषित किया था और लोगों ने उन को आज्ञापालन का वचन भी दिया था) में अली के उत्तराधिकारी माने जाने के बारे में किया था। इन लोगों की दृढ़ सद्भावना से प्रभावित हो कर अन्य लोगों ने भी उचित तथा सत्य समझते हुऐ अहलेबैत[अ०] से अपने सम्बन्ध जोड़ लिए इन्हीं में से बारह आदमी वह थे जिन्हों ने जुमे (शुक्रवार) के दिन रसूल की मसजिद में मोमिनों के सरदार हज़रत अली की खिलाफ़त (उन को रसूल का उत्तराधिकारी बनाने और इस्लामी राज्य का मालिक बनने) के अधिकार की सत्यता पर प्रकाश डालते हुए भाषण भी दिए। और बहुमत के मनमाने राज्य सिद्धान्तों एवं शासन के विरूद्ध अनुरोध भी किया। इन में ऊपर लिखे गये तीन नामों के अतिरिक्त शरणार्थियों (मक्के से मदीने चले आने वाले) में से अम्मार बिन यासिर और अनसार (सहायक व्यक्ति जो मदीने के रहने वाले थे), में से उबई बिन काब और ख़ुज़ैमा बिन साबित, द्बलिदानी और एतिहासिक दृष्टिकोण से यह आचम्भे की बात है कि उमैया गोत्र में से खालिद बिन सईद बिन आस भी इस अनुरोध में सम्मिलित थे। शेष शरणर्थियों तथा सहायक गण में से दूसरे लोग भी थे।

अरब की गोत्रों में से जिस गोत्र का नाम ''मुरतदीन'' (दीन से अलग होने वाला) रखा गया और उन पर यह अपराध लगाया गया कि वे ज़कात (वह रुपया जो मुसलमान अपने माल का चालीसवाँ भाग निकाल करके दान करते हैं) ख़लीफ़ा (उस समय के) को नहीं देते इसलिए उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाए और इस प्रकार उनके हत्याकाण्ड को कर्तव्य जाना गया। इन व्यक्तियों में से बहुधा ऐसे थे जो उस शासन को स्वीकार नहीं करते थे जो पैग़म्बरे ख़ुदा के आदेशों के विरूद्ध स्थापित हुआ था। इस प्रकार शीईयत के चित्र

में मालिक बिन नुवैरा आदि के रक्त की लाली भी मिश्रित हो गई।

शीईयत की क्रमिक उन्नति

धीरे-धीरे कुछ तो समय के उलटफेर से कुछ राजनीति का नशा उतरने के कारण, कुछ ऊपर वर्णन किए हुए व्यक्तियों से बातचीत तथा वाद-विवाद के फलस्वरूप में और कुछ उस समय की सरकार के अन्यायों तथा दुर्व्यहवार और बेक़ाएदगियों का अनुभव करते हुए बहुत से व्यक्ति वास्तविक्ता के समीप होते गए और उसमान की ख़िलाफ़त के युग में कुटुम्ब सम्बन्धियों के पालन पोषण की पॉलीसी ने इस झुकाव को और भी शक्ति प्रदान की।

उसमान के विरोधी यद्यपि इन्हीं राजनैतिक कारणों से अधिक्तः उनके मुक़ाबले के लिए तैयार हुए थे किन्तु कुछ व्यक्ति उन विरोधियों के साथ अवश्य ऐसे सम्मिलित हो गए थे जो अहलेबैत (रसूल के घर वालों) की मित्रता अथवा उनके शिया होने के नाते उस सरकार ही को त्रुटिपूर्ण समझते थे इनमें प्रसिद्ध लोग अम्मार बिन यासिर, मुहम्मद बिन अबुबकर और मालिक अशतर थे। सन् 35 हिजरी में हज़रत अमीर (अली) इस्लामी ख़िलाफ़त पर वैधानिक रूप से अधिकारी हुए तो बनी उमैया के मुक़ाबले में जिन लोगों ने आपका साथ दिया वे सब अली के बिल्कुल निकट रहकर उनकी योग्यता और उनके गुणों से परिचित होकर एवं एनकी शिक्षा से प्रभावित होकर वास्तव में शिया हो गए।

अम्मारे यासिर और मालिक अशतर द्वारा शीईयत इराक़ देश में परिचित हुई। और मुहम्मद बिन अबूबक्र द्वारा मिस्र में शीईयत का प्रचार हुआ। यमन देश वालों को हज़रत अली[अ०] से पहले ही से श्रद्धा थी क्योंकि उन्हीं के चरित्रपूर्ण प्रसार द्वारा वहाँ वाले इस्लाम की सम्पत्ति से मालामाल हुए इस लिए वह भीस बाशिया थे हज़रत अबुज़रे ग़फ़ारी जिन्होंने तीसरे ख़लीफ़ा के समय में शाम देश भ्रमण किया था उनके द्वारा शाम के पहाड़ी प्रान्त जबले तामिल के शहरों में शीईयत का प्रसार हुआ।

इस युग के प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण शिया व्यक्तियों में मालिके अशतर, सईद बिन क़ैस हमादानी क़ैस बिन साद इबादह, हज्र बिन अदी, अम्र बिन हुमुक़ ख़िज़ाई और अब्दुल्लाह बिन बुदैल बिन वरक़ए ख़िज़ाई इत्यादि थे जो जेहाद में भी मर्दे मैदान थे।

इनके अतिरिक्त कुमैल बिन ज़्याद, मीसमे तम्मार और रशीदे हिजरी आदि थे जिन्होंने अमीरुलमोमिनीन (हज़रत अली) से शिक्षा पाकर उच्च श्रेणियाँ प्राप्त कीं पवित्र संतान के अतिरिक्त इन्हीं व्यक्तियों द्वारा प्रसारित हुईं। तफ़सीर विज्ञान (क़ुरआन का विस्तार पूर्वक अर्थ) फ़िक़्ह (धार्मिक विज्ञान) आदि में अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास बहुत प्रसिद्ध थे और भाषा विज्ञान में अबुलअसवद दोएली आपके मुख्य शिष्य थे जिन्होंने क़ुरआन मजीद पर नुक़ते लगाए। और उसमें मात्राएँ लगाईं उनकी इस सेवा से इस्लामी संसार प्रलय दिवस तक उनका कृतज्ञ रहेगा।

संकट का युग और उनके विरुद्ध क्रिया

तहकीम[1] के पश्चात शाम सरकार की शक्ति में बढ़ोतरी हो गई थी और इमाम हसन से संधि होने के बाद मुआविया शाही समस्त इस्लामी संसार पर छा गई यह वह युग था जो शीईयत के लिए अधिक हानिपूर्ण था। हज्र बिन अदी अपने छः साथियों के समेत सूली पर लटका दिए गए अम्र बिन हुमुक़ का सर काट कर नेज़े पर ऊँचा किया गया। हज़्रमियों को क़त्ल व ग़ारत किया गया। ज़्याद बिन अबीह, समरा बिन जुन्दुब और बस्र बिन अरतात ने हज़ारों शियाने अली (वह लोग जो अली के मित्र थे) को तलवार के घाट उतार दिया और यह अवस्था सन् 60 हिजरी तक बाक़ी रही।

उस समय यह पता भी न चलता था कि इस्लामी संसार में शिया वर्ग भी कोई वर्ग है। किन्तु सन् 61 हिजरी में जब कर्बला में हुसैन इब्ने अली ने अपने

(1) सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में जब मुआविया, अली से हार रहा था तो उसने अम्रे आस की राय से क़ुरआन को डंडों में बाँध कर ऊँचा किया परन्तु अली ने कहा कि ये सब चतुरता है किन्तु अली ही की सेना के बहुत से गद्दारों ने लड़ाई बन्द करने पर अली को मजबूर किया और अबुमूसा अशअरी और अम्रे आस अलग-अलग अली और मुआविया की ओर से पंच बने और इन्होंने मिलकर ग़लत निर्णय दिया और इस प्रकार ग़द्दारों द्वारा अली को यह जीती हुई लड़ाई हाथ से जाने देना पड़ी।

अमूल्य बलिदानों की रूपरेखा तैयार की तो संसार से शीईयत की वास्तविक शक्ति अपनी आखों द्वारा उन ७२ व्यक्तियों की सूरतों में देखी जिनके समान अटल दृढ़ एवं पवित्र लोग इस घटना के पूर्व कभी दस की संख्या में भी एक स्थान पर एकत्रित नहीं हुए थे। इसके पूर्व पन्द्रह बीस वर्ष के समय तक किसी में इतना साहस न था जो स्पष्टतः अहलेबैत के गुणों का वर्णन कर सके किन्तु हुसैन के उत्तम बलिदान ने वास्तविक्ता प्रकाशन साहस को वह शक्ति पहुँचाई कि सुलैमान बिन सर्द ख़ज़ाई के साथ हज़ारों आदमी सर से कफ़न बाँध कर मैदान में आ गए। फिर मुख़तार के जेहाद (धार्मिक युद्ध) जो हुसैन के ख़ून का बदला लेने के हेतु थे उनमें शीईयत ने खुल कर अपने जीवन का सबूत दिया। यद्यपि सरकार की असीमित शक्तियों ने इनकी ज़िन्दगियों को नष्ट कर डाला किन्तु वह पवित्र भावना मुर्दा न हुई और अन्त में उसी भावना ने बनी उमैया की ईंट से ईंट बजा दी बनी अब्बास ने इसी शीईयत की छाया के नीचे अपने राज्य की स्थापना की। यह और बात है कि उन्होंने शक्ति प्राप्त करने के पश्चात् अपने प्रण को तोड़ दिया और हज़रत अली की सन्तान से अपने सौतेलेपन के क्रोध का प्रदर्शन किया। शिया मंत्री अबुसलम-ए-ख़िलाल को क़त्ल किया और अबूमुस्लिम अस्फ़हानी के साथ भी यही दुर्व्यवहार किया और फिर रसूल की संतान में से इमामों और सय्यदों पर लगातार इतना अत्याचार किया कि बनी उमैया को भी इतने अत्याचार करने का अवसर न मिला था।

निस्सन्देह बनी उमैया के शासन के पतन और बनी अब्बास के शासन के पैर जमाने के बीच का समय ऐसा था जिसमें इमाम मुहम्मद बाक़िर और इमाम जाफ़र सादिक़ हुए और इन्हीं के समय में अहलेबैत की शिक्षा तथा शियों को अपने धार्मिक विश्वास को फैलाने और पुस्तकें आदि लिखने का अवसर मिला। इस युग में इमामत की समस्या पर वाद विवाद भी होने लगे थे। और हिशाम बिन हकम, हिशाम बिने सालिम, क़ैस, मासिर, मोमिन अलताक़ आदि भाषा की समस्याओं पर प्रायः पर्याप्त वाद विवाद करते थे। ज़ुरारा बिन ऐईन, मुहम्मद बिन मुस्लिम और अबू बसीर आदि धार्मिक आदेशों की रक्षा करते थे। इस्माईल हुमैरी अपनी कविताओं द्वारा अहलेबैत (रसूल के घर वाले) के गुणों का प्रसार करते थे। और जाबिर बिन हयान तरतूसी भौतिक विज्ञान और अबान बिन तग़लब भाषा विज्ञान में शियों की योग्यता का सिक्का जमा रहे थे। सन 150हि० के पश्चात बनी अब्बास के शासन की हिंसा और अत्याचार बहुत बढ़ गया था और इसकी सीमा यहाँ तक पहुँच चुकी थी कि शिया उलमा अपने इमाम हज़रत मूसा काज़िम का नाम भी नहीं ले सकते थे हालांकि उस समय के इमाम वही थे। यह उलमा (शिया पंडित) इमाम को ''पवित्र व्यक्ति'' के शब्दों से याद करते थे किन्तु उनके बाद इमाम रिज़ा इमाम हुए और उनको मामून रशीद बादशाह ने राजनैतिक कठिनाईयों से विवश होकर अपना उत्तराधिकारी घोषित करके एक अवसर शीईयत के प्रचार का और दे दिया।

ईरान पूर्व से ही शीईयत से परिचित हो चुका था। क्योंकि वहाँ के सम्राट यज़्दजुर्द की सुपुत्री हज़रत शहरबानों इमाम हुसैन की पत्नी इमाम ज़ैनुलआबेदीन की माता थीं। अब इमाम रिज़ा के ख़ुरासान में स्थानीय होने के कारण ईरान देश को अहलेबैत से परिचित होने का अधिक अवसर मिला।

यद्यपि मामून रशीद ने फिर अपनी राजनीति के त्रुटि के कारण इमाम रिज़ा को विष देकर उनके जीवन दीपक को बुझा दिया किन्तु वह प्रभाव जो इमाम रिज़ा के ख़ुरासान में रहने से पड़ चुके थे मिटाये न मिट सकते थे। इसी का फल था कि ईरान का क़ुम नगर अहलेबैत की शान का केन्द्र बन चुका था।

अब शीईयत का प्रसार इतना हो चुका था कि उसके मिटने का ज़ाहिरी तौर पर कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। फिर भी अब्बासी शासन का अत्याचार मामून रशीद के बाद अधिक ज़ोर पकड़ गया जितनी-जितनी शीईयत की उन्नति होती जाती थी उतनी ही सरकार की ओर से अत्याचार बढ़ता जाता था। अब यह तीसरी शताब्दी हिजरी का माध्यमिक काल था जिसमें मुतवक्किल ने अनुभव किया कि शीईयत की ओर खिंचाव का केन्द्रीय बिन्दु शाहीदे कर्बला हज़रत इमाम हुसैन का व्यक्तित्व है। परन्तु उस समय इमाम हुसैन तो उनके सामने न थे कि

उनके विरुद्ध लड़ाई की जाती अतएव इमाम हुसैन की क़ब्र की चिन्ह मिटाने के प्रयत्न किए गए और उनके तीर्थ से रोका गया किन्तु हुसैन के चाहने वालों ने उनकी क़ब्र की यात्रा अपने हाथ पैर और गर्दन कटाकर की और तीर्थ से बाज़ न आये और ना ही अल्लाह ने क़ब्रे हुसैन के चिन्हों को मिटाने की योजना को सफ़ल होने दिया।

बल्कि इसी बीच में जब अत्याचार के बंधन हुसैनी भावनाओं को कुचलने के प्रयत्न में लीन होकर रोटते थे तो वह भावना अधिक शक्तिवान तथा तूफ़ानी होकर उभरती थी। बग़दाद में इमाम मूसा काज़िम और इमाम मुहम्मद तक़ी का क़ैद होना और सामरा में इमाम अली नक़ी और इमाम हसन असकरी का कारागृही होना इराक़ में शीईयत की उन्नति का कारण बना। अतएव तीसरी सदी हिजरी में ईरान के शीईयत केन्द्र क़ुम के अतिरिक्त अब्बासी सरकार की राजधानी बग़दाद में शीईयत का एक केन्द्र मौजूद था। बारहवें इमाम (अन्तिम पथप्रदशक) के चारों नायब (वुकलाए अरबा) इसी बग़दाद में थे और शिया हदीस की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक "काफ़ी" इसी बग़दाद में लिखी गई।

ज्ञान केन्द्र

शीईयत के दो विद्या केन्द्र थे एक तो क़ुम में दूसरा इराक़ में बग़दाद काज़मैन क़ुर स्कूल के अन्तिम मुख्य प्रतिनिधि शैख़ सदूक़ मुहम्मद बिन अली बिन बाबवैह क़ुम्मी थे धीरे-धीरे इराक़ के केन्द्र ने इतनी शक्ति प्राप्त कर ली कि क़ुम उसके सामने फीका पड़ गया। पाँचवीं शताब्दी हिजरी में बग़दाद ही शीईयत का मुख्य केन्द्र हो गया।

शिया राज्य

उस समय में संसार में शियों के राज्यों की भी स्थापना हो गई थी। ईरान और इराक़ में बहाई वंश के सम्राट बहाउद्दौला, अजउद्दौला और सबसे बढ़कर अज़्दुद्दौला दैलगी अपना सिक्का चला रहे थे। हलब में हमदान वंश का राज था जिनका प्रसिद्ध राजा सैफ़ुद्दौला था और मिश्र में फ़ातिमी वंश का राज था जिसकी स्मृति आज भी उस समय से लेकर अब तक एक बड़े विश्वविद्यालय के रूप में मौजूद है जिसका नाम अज़हर युनिवर्सिटी है। यही वह समय था जब खुले आम बग़दाद नगर में मुहर्रम मनाया गया है और सबसे पहला मातमी जुलूस निकला और मिश्र की मस्जिदों की मीनारों से "हय्या अला ख़ैरिल अमल" (आओ अच्छे कार्य की ओर) और "अश्हदु अन्ना अलिय्यन वलिय्युल्लाह" (मैं गवाही देता हूँ कि अली अल्लाह के वली हैं) की आवाज़ें वायुमण्डल में गूँजी। बग़दाद की राजधानी में शैख़ मुफ़ीद सय्यद मुर्तज़ा इल्मुल हुदा और सय्यद रज़ी जैसे विद्वान पैदा हुए जिनकी शिक्षावृति से हज़ारों शिष्यों ने लाभ उठाया।

नजफ़ नगर में शिक्षा केन्द्र की स्थापना

शीईयत की इस उन्नति से विरोधी गण का आग बगोला होना स्पष्ट है अतएव पाँचवीं शताब्दी के मध्य में बग़दाद नगर के मुहल्ला कर्ख़ के शियों पर धावा बोल दिया गया इतने शियों की हत्या की गई कि कई दिन तक दजला नदी का पानी ख़ून से लाल रहा शैख़ुत्ताएफ़ा शैख़ तूसी[अ०र०] जो इस समय तक बग़दाद में थे उनकी पाठशाला और मस्जिद पर आक्रमण किया गया वह मिम्बर (लकड़ी का बना हुआ ऊँचा स्थान जहाँ अध्यापक बैठ कर पाठन कार्य करता था) जिस पर बैठकर वह पाठन कार्य करता था आग से जला दिया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने बग़दाद छोड़कर नजफ़ में शरण ली। इसके पश्चात् नजफ़ शिक्षा केन्द्र बन गया।

विरोधी सरकार का पतन और शीईयत की महान विजय

शियों के इस प्रकार मारे जाने का परिणाम विरोधी सरकार के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ। बनी अब्बास के शासम में शक्ति हीनता आ गई और थोड़े ही दिनों के पश्चात तातारियों ने इस वंश का नाश कर दिया।

मज़े की बात तो यह है कि उस समय में जबकि तातारी शासन समस्त इस्लामी राज्य के पुर्ज़े उड़ाकर भौतिक रूप से विजयी हो गया था फिर भी वह आध्यात्मिक रूप से शियों से पराजित रहा। वह इस प्रकार कि सम्राट हलाकू के वंश में सुलतान अलजाइतु ख़ुदाबन्दा ने समस्त धार्मों के अध्ययन करने के पश्चात इस्लाम धर्म स्वीकार किया और इस्लाम के सभी सम्प्रदायों

के बीच वाद विवाद की स्थापना करने के पश्चात शीईयत की सत्यता के आगे सर झुका दिया और वह स्वयं शिया हो गया।

एक और शिक्षा केन्द्र

अब इराक़ में एक और शिया केन्द्र हिल्ला में स्थापित हुआ था जहाँ फ़िक़्ह की वह पुस्तक जिस पर धर्म सिद्धान्तों का दारोमदार है लिखी गई उसका नाम 'शराएउल इस्लाम' है। फिर यही अल्लामा हिल्ली, उनके बेटे फ़ख़्रुल मुहक़्क़ीन और इब्ने फहदे हिल्ली जैसे विद्वान पैदा हुए।

ईरान और हिन्दुस्तान में शीईयत की उन्नति

दसवीं शताब्दी में शीईयत का प्रभाव इतना बढ़ गया कि भारत में भी शिया राज स्थापित हो गए। दक्षिण में क़ुतुब शाही और आदिल शाही राज स्थापित हो गए इसके अतिरिक्त अहमद नगर में भी शीईयत ने पाँव जमा लिये। अशिया मुग़लिया शासन काल में भी बैरम ख़ाँ, मौलाना अबुल फ़तह, फ़ैज़ी, अबुल फ़ज़ल और क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी जैसे मुख्य शिया सरकार की ओर से राजकाज में भागी थे और ईरान में सफ़वी वंश के बादशाहों ने सारे देश पर शीईयत का वह चरित्रपूर्ण प्रभाव डाला कि सदा के लिए वहाँ अशीईयत लुप्त हो गई यह सफ़वी बादशाहों की वह विजय है जिसका उदाहरण विश्व-इतिहास में नहीं मिल सकता और यह विजय तलवार द्वारा नहीं बल्कि सत्यता एवं शांति द्वारा उनको प्राप्त हुई थी। यह मानसिक परिवर्तन कदापि तलवार द्वारा सम्भव न था।

ग्यारहवीं शताब्दी हिजरी में शिया राज अरब में यमन और अजम (जो अरब ने हो) में ईरान और हिन्दुस्तान में दक्षिण में स्थापित थे। अवध में जौनपुर, पूर्वी राजाओं (सलातीने शर्क़ी) के कारण शीईयत का केन्द्र बना हुआ था। और शिया उलमा (विद्वानों) में से ईरान में अल्लामा मजलिसी[अ०रह०] ने शीईयत की वह सेवा की जो अपना आप उदाहरण है।

बारहवीं शताब्दी हिजरी में जौनपुर की कमी को फ़ैज़ाबाद ने पूरा किया और तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब ग़ुफ़रानमआब मौलाना सैयद दिलदार अलीअ०रह० ने इराक़ से विधाध्य के पश्चात लखनऊको अपने धार्मिक प्रचार का केन्द्र बनाया तो उनके तथा उनके वंश के बड़े विद्वानों (आलिमों) के आदेशानुसार अवध सरकार ने शीईयत की वह अमूल्य सेवा की जिसके जीवित चित्र आज भी मौजूद हैं।

13 रजब सन् 1200[हि०] को हिन्दुस्तान में शियों की पहली नमाज़े जमाअत जनाब ग़ुफ़रानमआब ने लखनऊ में पढ़ाई और 17 रजब सन् 1200[हि०] में सबसे पहली नमाज़े जुमा पढ़ाई गई। इस युग में ग़ुफ़रानमआब ने शिया (इल्मे कलाम) की सबसे बड़ी पुस्तक इमादुल इस्लाम की रचना की। इसी शताब्दी के मध्य में इराक़ में शिया फ़िक़्ह (धर्म शास्त्र) का सबसे बड़ा ग्रन्थ जवाहिरुलकलाम लिखा गया। और इसी के पश्चात फ़िक़्ह सिद्धान्त की महत्वपूर्ण पुस्तक किताब रसायल लिखी गई।

अब अवध राज के अतिरिक्त शियों के कई राज बंगाल में स्थापित थे और सिंध में तालपुर वंश के राज हैदराबाद और ख़ैरपुर में स्थापित थे। चौदहवीं शताब्दी के आते-आते यद्यपि अवध राज लुप्त हो चुका था फिर भी खुदमुख़्तार (स्वाधीन) रियासतें रामपुर, मुर्शिदाबाद, बेगनपली, खम्बात और ख़ैरपुर सिंध में स्थापित थी। अब देश के बटवारे के पश्चात हिन्दुस्तान की समस्त रियासतों के साथ शिया रियासतें भी समाप्त हो गईं फिर भी उन का प्रभाव अब भी है। पाकिस्तान में ख़ैरपुर शिया रियासत है। यमन और ईरान के शिया राज अल्लाह की कृपा से अब भी हैं। और शिक्षा केन्द्र ईरान में क़ुम, इराक़ में नजफ़े अशरफ़ और हिन्दुस्तान में लखनऊ किसी न किसी दिशा में अब भी स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त बहुत कम ऐसे स्थान होंगे जहाँ मुसलमान हों और शिया वर्ग के लोग न हों।

यह है उस शिया जाति का संक्षिप्त इतिहास, जिसके नष्ट करने के लिए राज्यों की शक्ति लगाई जाती रही किन्तु यह अपनी सत्यता और हुसैन बलिदान के कारण संसार में अमर हो गई।

□□□

इराक़ की सरज़मीन से अर्ज़े हाल

जनाब शकील हसन शमसी साहब "राष्ट्रीय सहारा" देहली

ज़िन्दगी में कुछ ऐसे मवाक़े आते हैं जब आपको अपनी क़िस्मत पर नाज़ करने को दिल चाहता है। ऐसा ही लम्हा मेरी ज़िन्दगी में तीसरी बार आया। एक बार जब मैं हज पर गया और दूसरी बार जब मैं ईरान गया था और अब इराक़ के शहर कर्बला में वाक़े नवास-ए-रसूल हज़रत इमाम हुसैन[अ०] और उनके छोटे भाई हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़ों की मुनतज़िमा कमेटी ने जब मुझे जश्ने रबीउश्शहादत के छः दिवसीय प्रोग्राम में शिरकत के लिए दावत दी थी तो मैं ख़ुशी से झूम उठा। ये जश्न इमामे हुसेन[अ०] और हज़रत अब्बास के यौमे विलादत के सिलसिले में मुनअक़िद हो रहा है। इस जश्न में दुनिया के मुख़्तलिफ़ गोशों से जिन उलमा, दानिश्वरों, मुफ़क्किरों और सहाफ़ियों को दावत दी गई थी उनमें रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा के सहाफ़ी के तौर पर मेरा नाम भी शामिल था। दावतनामे के साथ-साथ वीज़ा भी मौजूद था। हिन्दुस्तान से जिन लोगों को बुलाया गया था, उनमें जे०एन०यू० के मेरे दोस्त प्रोफ़ेसर ऐनुल हसन आब्दी, बंगलौर के समाजी और मज़हबी कारकुन आग़ा सुलतान और मैसूर के माहिर सर्जन डाक्टर मुहम्मद रज़ा भी शामिल हैं। मैं 16 जुलाई को गल्फ़ एयर की फ़्लाइट से बहरैन पहुँच गया। कर्बला के रौज़ों का इन्तेज़ाम देखने वाली कमेटी के नुमाइन्दे हमारे ख़ैरमक़दम के लिए मौजूद थे।

हम लोग नजफ़ से सीधे कर्बला के लिए रवाना हुए। हमारी गाड़ियाँ 180 किलोमीटर की रफ़्तार से चल रही थीं। रास्ते में कई जगहों पर चेकिंग हो रही थी, लेकिन हमारी गाड़ियों की कहीं चेकिंग नहीं हुई, क्योंकि उन पर ख़ास स्टीकर लगे हुए थे। नजफ़ से कर्बला का 90 किलोमीटर का सफ़र सिर्फ़ एक घण्टे में तैय हुआ, लेकिन कर्बला में दाख़िल होने के बाद हमको होटल पहुँचने तक आधा घण्टा लगा। हम जब कर्बला में दाख़िल हुए तो सबसे पहली नज़र हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़े पर पड़ी। ख़ुशी के मारे दम निकलने को था और आँखों में आँसुओं का समन्दर मौजज़न था। हम रौज़े की पुश्त पर से होते हुए नहरे फ़ुरात के किनारे पहुँचे। मैं देर तक नहरे फ़ुरात को ग़ौर से देख रहा था। आज फ़ुरात का पानी इस क़ाबिल नहीं है कि इसको बग़ैर साफ़ किए हुए पिया जा सके, लेकिन आज से दो सौ साल पहले तक इसका पानी इतना शफ़्फ़ाफ़ था कि नहर के अन्दर की ज़मीन भी दिखाई पड़ती थी। फ़ुरात में कुछ बच्चे नहा रहे थे, कुछ किनारों पर से झलांग लगा रहे थे और मैं रसूलुल्लाह[अ०] के घर के उन बच्चों को याद कर रहा था जो अल-अतश की सदाएं बलन्द कर रहे थे। मुझे इसकी लहरों में प्यासों पर बरसते हुए तीर नज़र आ रहे थे। फ़ुरात तेज़ी से रवाँ थी, लेकिन पता नहीं क्यों मुझे फ़ुरात पर एक अजीब सी उदासी छाई हुई लग रही थी, हालांकि हर रोज़ लाखों आदमियों की प्यास यही नहर बुझाती है, लेकिन पानी की हर मौज जैसे अपना रंग खो चुकी है। मेरा दिल चाहा कि फ़ुरात से मुकालमा करूँ और पूछूँ कि तुझे अलक़मा नाम के बादशाह ने सैकड़ों साल पहले तामीर किया था, उस वक़्त से लेकर अब तक न जाने कितने करोड़ लोगों की प्यास बुझा चुकी है। तू ही इस ख़ित्ते की लाइफ़लाइन है, तू ही तो न जाने कितनी सदियों से इस ख़ित्ते की आबियारी कर रही है, फिर भी

तू इस क़दर उदास क्यों है? मैं फ़ुरात से अभी सवाल पूछ ही रहा था रहा कि अचानक मुझको लगा फ़ुरात ने एक शेर की शक्ल में मुझे अपना जवाब अता किया-

अब रोज़ लाखों लोग पियें भी तो क्या मज़ा
मैं जिनको चाहती थी वह पानी न पी सके

नहरे फ़ुरात से गुफ़्तगू करने के बाद मैं होटल में दाख़िल हुआ, लेकिन यहाँ हमको ठहरना नहीं था सिर्फ़ लंच करना था। खाना खाने के बाद हम लोग अपने होटल के लिए रवाना हुए। वैसे तो कर्बला में रौज़ों के आसपास के इलाक़ों में गाड़ियाँ आने पर पाबन्दी है, लेकिन हमारी कारों को ख़ुसूसी छूट थी, इसलिए हमारी गाड़ियाँ ज़ाएरीन के हुजूम के दरमियान रेंगती हुई होटल की तरफ़ जा रही थीं। थोड़ी देर के बाद हम इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े से तीन सौ मीटर के फ़ासले पर क़ायम होटल अररायात में पहुँच गए। जिस प्रोग्राम में हम बुलाए गए थे उसकी इफ़्तेताही तक़रीब पाँच बजे थी, लेकिन हम लोगों को काफ़ी देर हो चुकी थी, हम लोग जल्दी-जल्दी ग़ुस्ल करके इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े के लिए रवाना हुए और रौज़े पर सलाम करके सीधे ख़ातमुल अम्बिया हाल में पहुँच गए, जहाँ हमारा बेसब्री से इन्तेज़ार हो रहा था क्योंकि प्रोफेसर एनुल हसन और मुझको इस सेमिनार की इफ़्तेताही तक़रीब में ही अपने मक़ालात पेश करना थे। हमारे लिए मुतरजिम का इन्तेज़ाम हो चुका था। इराक़ के नायब वज़ीर आज़म इस मौक़े पर ख़ुसूसी मेहमान थे। उनकी तक़रीर हुई, कई उलमा की तक़रीरें हुईं, कुवैत के मिनिस्टर फार इन्फ़ारमेशन और वहाँ के मेम्बर पार्लिमेण्ट ने अपने ख़यालात का इज़हार किया, फिर मुझे बुलाया गया। मैंने इमाम हुसैन और हिन्दुस्तान के उनवान से अपने ख़यालात का इज़हार किया और हिन्दुस्तान के बारे में कुछ दिलचस्प हक़ाएक़ हाज़िरीन से खचाखच भरे हाल में पेश किए। मैंने जब ये कहा कि आप लोग कर्बला में रहते हैं, लेकिन कई हज़ार मील दूर रहने के बावजूद कर्बला हमारे दिल में रहती है तो लोग बहुत ख़ुश हुए। मैंने अहले इराक़ को बताया कि हिन्दुस्तान का शायद ही कोई शहर ऐसा हो, जहाँ कर्बला नाम की कई इमारतें मौजूद न हों। लखनऊ जैसे शहर में तो कर्बला नाम की बीस पच्चीस तारीख़ी इमारतें हैं। मैंने जल्से में कहा कि हिन्दुस्तान के तूलो अर्ज़ में जितने हुसैनिया (इमामबाड़े) हैं, दुनिया के दूसरे किसी मुल्क नहीं होंगे। मैंने ये भी बताया कि कई ऐसी इमारतें भी हैं, जो हिन्दू अक़ीदतमन्दों ने इमाम हुसैन[अ०] की याद में बनवाई हैं। ये सब इत्तेलाआत अहले इराक़े के लिए हैरानकुन थीं। इसकी वजह ये है कि हिन्द व इराक़ के दरमियान रवाबित तक़रीबन ख़त्म हो गए थे, इसलिए दोनों मुमालिक की मौजूदा नसलें एक दूसरे के बारे में वाक़िफ़ नहीं हैं। मेरे बाद प्रोफेसर ऐनुल हसन ने तक़रीर की और हिन्दुस्तान के हिन्दू शोअ्रा के कई अशआर की रौशनी में ये बताया कि हिन्दुस्तान के ग़ैर मुस्लिम अफ़राद इमाम हुसैन[अ०] से किस क़दर मुहब्बत व अक़ीदत रखते हैं।

बहरहाल तीन शाबान को हम कर्बला पहुँच कर बहुत ख़ुश थे, क्योंकि इमाम हुसैन[अ०] की रौज़े पर उनकी विलादत के जश्न में शरीक होना अपने आप में एक बड़ी सआदत है। पूरे कर्बला में झंडियाँ लगी थीं, सुर्ख़ परचम लहरा रहे थे, कुमक़ुमे रौशन थे और अवाम की तरफ़ से जुलूस निकाले जा रहे थे जिनमें शामिल बच्चे, जवान औरतें और बुज़ुर्ग अरबी के लोक गीत गा रहे थे। जुलूसों में शामिल लोगों ने अपने हाथ में शमएं भी उठा रखी थीं।

चार शाबान को हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़े पर शानदार जश्न हुआ। वहाँ ख़ालिस सोने की प्लेटों को जोड़ कर नए मीनार बनाए गए थे, जो कई दिन से ग़िलाफ़ में थे इस तक़रीब के दौरान ग़िलाफ़ उठाया गया। इस प्रोग्राम में एक लाख से ज़्यादा आदमी शरीक हुए। इन मीनारों की तामीर में 108 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल हुआ है और तक़रीबन तीन साल के अरसे में ये बनकर तैयार हुए हैं।

जहाँ तक इराक़ के हालात का सवाल है तो बड़ी अजीब सी सूरते हाल है। नजफ़ से लेकर कर्बला तक के सफ़र के दौरान हमको कहीं भी अमरीकी फ़ौज या अमरीकी गाड़ियाँ नहीं दिखाई पड़ीं। हर जगह इराक़ की फौज, पुलिस और दहशतगर्दों से लड़ने वाली स्पेशल

टास्क फोर्स के लोग ही नज़र आए। कर्बला में हिफ़ाज़त का सारा इन्तेज़ाम मक़ामी पुलिस के हाथों में ही था। कर्बला में दाख़िल होने वाले हर रास्ते पर गाड़ियों की तलाशी लेने के लिए चेकपोस्ट बने हुए थे और शहर के अन्दर हाल ये है कि मुक़द्दस रौज़ों तक जाने वाले हर रास्ते पर कम से कम चार जगहों पर पैदल चलने वालों की जामा तलाशी होती है। हम लोगों को ख़ुसूसी बैज फ़राहम किए गए हैं, इसलिए हमारी जामा तलाशी नहीं हुई लेकिन अगर हम अकेले निकलें और हमारे पास अपने बैज न हों तो हमको भी तलाशी देना पड़ती है। हम लोग अभी कर्बला में ही हैं और ये छः रोज़ा जश्न ख़त्म होने के बाद ही बग़दाद काज़मैन और नजफ़ जा सकेंगे। यहाँ न तो अंग्रेज़ी का अख़बार है न टी०वी० पर अंग्रेज़ी ख़बरें आती हैं, इसलिए दुनिया में क्या हो रहा है इसका इल्म हमको नहीं। कल देहली से हमारी अहलिया ने बताया कि बग़दाद में एक बम ब्लास्ट हुआ जिसमें 40 लोग मारे गए लेकिन यहाँ हम लोग बेख़बर थे। इस बारे में इमाम हुसैन मीडिया सेण्टर के एक सीनियर ओहदेदार हैदर मनकूशी से जब मैंने पूछा कि बग़दाद में क्या ब्लास्ट हुआ है तो उन्होंने कहा कि यहाँ तो धमाके होते ही रहते हैं और अब तो हमको उसकी आवाज़ भी सुनाई नहीं पड़ती क्योंकि हम मरने के लिए हर वक़्त तैयार रहते हैं शायद इन लोगों को बस तिलावते कलाम पाक, नमाज़ और ज़िक्रे हुसैन की आवाज़ ही सुनाई पड़ती है। उनकी इस बात ये लगा कि इराक़ वालों के दिल से मौत का ख़ौफ़ निकल चुका है और तारीख़ बताती है कि ऐसे ही हालात में तेग़ नाकाम होती है और रगे गुलू फ़तहयाब होती है। बाद में एक इराक़ी ने बताया कि धमाका बग़दाद में नहीं बल्कि फ़लूजा में हुआ था जो इराक़ के सुन्नी मुसलमानों का शहर है। सोचने की बात तो यही है कि दहशतगर्दों का ताल्लुक़ आख़िर किस फ़िरक़े से है जो कभी शियों को निशाना बनाते हैं और कभी सुन्नियों को। (बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 21 जुलाई 2010ई०)

इराक़ में मुँह छिपाए हैं अमरीकी फ़ौजें

वैसे तो इराक़ पर अमरीकी फ़ौजों का क़ब्ज़ा है लेकिन ताज्जुब की बात ये है कि कहीं भी अमरीकी फ़ौजें नज़र नहीं आईं। मैंने कर्बला से सामरा तक का 260 किलोमीटर का सफ़र किया और रास्ते में हर पाँच दस किलोमीटर के फ़ासले पर मौजूद सेक्योरिटी चेक प्वाइन्ट से भी गुज़रा जहाँ इराक़ी पुलिस और मुसल्लह अफ़वाज हाथों में ए०के० 47 लिए हुए मुस्तएदी के साथ गाड़ियों को चेक कर रहे थे। इन चेक पोस्टों पर चेकिंग इतनी सख़्त थी कि किसी क़िस्म का माद्दा भी अगर गाड़ी में मौजूद होता तो उसकी निशानदेही Explosive Detector फ़ौरन कर देता था। यहाँ तक कि दवा की गोलियों और पाउडर की मौजूदगी की इत्तेला भी ये मशीन फ़राहम कर देती है। इन चेक पोस्टों के आसपास बक्तरबन्द गाड़ियाँ मौजूद होती हैं जिनको "T-Walls" कहा जाता है। इन मज़बूत दीवारों पर ब्लास्ट का कोई असर नहीं होता। हर हिफ़ाज़ती नाके पर razor wire की बाढ़ भी लगी होती है। इस तेज़ धार वाले को तार को पार करने की कोशिश करने वाला लहूलहान भी हो सकता है। इन नाकों पर गो कि चेकिंग में कुछ ही सेकेण्ड लगते हैं फिर भी गाड़ियों की एक लम्बी क़तार हर चेकपोस्ट पर नज़र आती है। हम लोग चूँकि मक़ामाते मुक़द्दसा की मैनेजिंग कमेटी के मेहमान थे इसलिए हमारी गाड़ी को एक ख़ास गुज़रनामा (पास) दिया गया था जिसको दिखाने के बाद हमारी गाड़ी को कारों की लम्बी लाइन से हटाकर दूसरी राहदारी से भेजा जाता था। सामरा से हम लोग डेढ़ सौ किलोमीटर दूर 'बलद' गए लेकिन तब भी हम लोगों को कोई अमरीकी दिखाई नहीं दिया। इस तरह बलद से बग़दाद के सफ़र के दौरान भी कहीं अमरीकी फ़ौज का चेहरा दिखाई नहीं दिया। कर्बला से नजफ़ अशरफ़ के दरमियान भी यही हाल था। मेरी हैरानी की इन्तेहा नहीं थी क्योंकि उम्मीद के मुताबिक़ इराक़ की हर शाहराह पर कोई न कोई अमरीकी फ़ौजी टुकड़ी होना चाहिए थी। मैंने एक इराक़ी दोस्त से इसकी वजह पूछी तो उसने कहा कि अमरीकी फ़ौजियों का चेहरा दिखाई न देने की एक वजह तो ये है कि यहाँ के अवाम उन से बेहद नफ़रत करते हैं और अक्सर सिर्फ़ अमरीकी फ़ौज की मौजूदगी की वजह से फ़साद जैसी सूरते हाल पैदा हो गई है। दूसरी वजह ये है कि अमरीकी फ़ौजें अपना चेहरा इसलिए भी

नहीं दिखाती हैं कि वह अपनी हलाकतों की तादाद कम से कम रखना चाहती हैं। चूँकि इन सेक्योरिटी नाकों पर अक्सरो बेश्तर खुदकश हमले होते रहते हैं, इसलिए अमरीकी हुक्काम ने बहुत चालाकी के साथ अपनी अफ़वाज को इस ख़तरे से बचा लिया है। मेरे दोस्त ने बताया कि ऐसा नहीं है कि अमरीकी फ़ौजें यहाँ से चली गई हैं या बैरकों में बैठी हैं वह हर सेक्योरिटी चेक पर मौजूद हैं लेकिन वह "T-Walls" के पीछे रहती हैं और अगर हमला होता है तो उसमें इराक़ी फ़ौज के जवान मारे जाते हैं और अमरीकी पूरी तरह महफ़ूज़ रहते हैं, वह धमाके के बाद बाहर निकलते हैं और आसपास की आबादियों को सरासीमा करने के लिए हवाई फ़ायरिंग करते हैं। इस तरह की चालाकी से अमरीकी अफ़वाज की शरहे अमवात में काफ़ी कमी आई है।

इत्तेफ़ाक़ से मेरी मुलाक़ात एक ऐसे बुज़ुर्ग इराक़ी से हुई जो अच्छी ख़ासी उर्दू बोल सकते हैं। वह कई दहाइयों से हिन्दुस्तान से इराक़ जाने वाले ख़ोजा मुसलमानों को ज़ियारत के सिलसिले में अपनी ख़िदमात फ़राहम करते हैं। उनसे जब मैंने कहा कि अब तो अमरीकी फ़ौज के इराक़ से जाने के दिन आने वाले हैं और उम्मीद की जा रही है कि साल भर के अन्दर ही अमरीका यहाँ से अपनी फ़ौजें हटा लेगा तो उन्होंने नाउम्मीदी के लहजे में कहा, अगर अमरीका को यहाँ से जाना ही होता तो आता क्यों? अमरीकी यहाँ से कभी नहीं हटेंगे, आप भी देखेंगे और आपके बच्चे भी देखेंगे कि अमरीकी यहीं रहेंगे। उन्होंने कहा कि इन अमरीकियों ने इराक़ को बर्बाद कर दिया। जब से अमरीकी आए हैं यहाँ शिया-सुन्नी की बात होने लगी है, वरना इस से पहले कभी ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि वह शाह फैसल के ज़माने से इराक़ के हालात देखते आ रहे हैं और उस वक़्त से आज तक कभी भी इराक़ में शिया-सुन्नी का सवाल यहाँ के समाज में मौजूद नहीं रहा। कोई नहीं पूछता कि आपका मसलक क्या है लेकिन इन अमरीकियों ने जब से यहाँ क़दम रखे हैं यहाँ शिया और सुन्नी आबादियों की बात होने लगी है। उन्होंने कहा कि शिया-सुन्नी का सवाल सद्दाम के ज़माने में भी नहीं उठा। सद्दाम का जो भी मुख़ालिफ़ था चाहे वह शिया हो हो या सुन्नी सद्दाम ने उसको बख़्शा नहीं चाहे वह खुद सद्दाम के दामाद ही क्यों न हों और जो भी सद्दाम का वफ़ादार था चाहे वह शिया हो या सुन्नी, मज़े में रहा। इस बुज़ुर्ग इराक़ से बात करके मुझे बहुत सुकून मिला क्योंकि उनकी बातों में ऐसा दर्द झलक रहा था जो शायद हर इराक़ी के दिल में मौजूद था।

इराक़ के तक़रीबन हर शहर में बिजली की शदीद क़िल्लत है और दरज-ए-हरारत 52 डिग्री सेलसियस तक की गर्मी में A.C. के बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारना बहुत मुश्किल है, इसलिए हर घर में जनरेटर ज़रूर मौजूद है, पेट्रोल सिर्फ़ 17 रुपये लीटर होने की वजह से जनरेटर चलाना और रखना आसान है लेकिन ये जनरेटर इतने ताक़तवर तो नहीं कि सारे घर को रौशन कर सकें इसलिए लोग परेशान नज़र आते हैं। हिन्दुस्तानी वफ़्द के एक अहम रुक्न सुल्तान आग़ा के एक इराक़ी दोस्त ने जब हम सब लोगों को दावत पर बुलाया तो बिजली ने बहुत परेशान किया मजबूरन हम सबको बाहर दालान में बैठना पड़ा। मैंने उस इराक़ी से मालूम किया कि बिजली की ये सूरते हाल क्या हमेशा से ही ऐसी है तो उसने जवाब दिया कि नहीं ऐसी हालत कभी नहीं थी— अमरीकी हमले से क़ब्ल इराक़ के लोग पावरकट के नाम से भी वाक़िफ़ नहीं थे लेकिन जब अमरीकियों ने हमला किया तो हमारे सारे पावर स्टेशनों को उसने उड़ा दिया और शहर कई दिन तक अंधेरे में डूबा रहा। उसने कहा कि अमरीकियों ने शहरी तन्सीबात और फ़ौजी तन्सीबात में ज़रा सा भी फ़र्क़ नहीं किया और दीवानावार हमले किए। उनको जहाँ इराक़ की तरक़्क़ी का कोई निशान दिखाई दिया, उसको तबाह करने में उन्होंने ज़रा सी भी झिझक महसूस नहीं की। उस इराक़ी ने कहा कि जबकि इसके पहले इराक़ आठ साल तक ईरान के साथ जंग करता रहा लेकिन ईरानी फ़ौजों ने कभी भी इराक़ के शहरी ठिकानों को नुक़सान नहीं पहुँचाया लेकिन अमरीका के नाम नेहाद बाउसूल फ़ौजी जनरलों ने शहरों और छावनियों में कोई इम्तियाज़ नहीं किया।

ईरान का ज़िक्र आया तो यहाँ ये भी बताता चलूँ

कि इराक़ में हर रोज़ हज़ारों ईरानी ज़ायरीन मक़ामाते मुक़द्दसा की ज़ियारत के लिए आते हैं और यहाँ के बाज़ारों में उनके दम से बड़ी रौनक़ रहती है। इराक़ में ईरानी करेन्सी तूमान की काफ़ी आओभगत की जाती है यहाँ उसके एक्सचेन्ज नहीं करवाना पड़ता बल्कि बाज़ारों में ईरानी करेन्सी क़ुबूल करने को हर दुकानदार तरजीह देता है। अगर आप ईरानी तूमान दिखाएं तो दुकानदार क़ीमत में तख़फ़ीफ़ भी कर देता है। सब ही दुकानदार फ़ारसी के काम चलाउ अलफ़ाज़ भी बोल लेते हैं, इसलिए ईरानी ज़ायरीन को सामान ख़रीदने में काफ़ी आसानी हो जाती है। इराक़ के सियासती उफ़ुक़ पर भी ईरानी रंग काफ़ी हद तक असरअन्दाज़ नज़र आता है, ख़ास तौर पर शोला बयान, जोशीले और जाँबाज़ मज़हबी रहनुमा मुक़तदा सद्र के बारे में कहा जाता है कि वह ईरानी हुकूमत के काफ़ी क़रीब हैं। उनके पास इराक़ की पार्लिमेण्ट में 40 सीटें हैं और उनके इत्तेहाद के पास कुल 70 सीटें हैं। अभी तक उनकी जानिब से हरी झण्डी न दिखाए जाने की वजह से इराक़ में नई हुकूमत की तश्कील नहीं हो सकी है। इराक़ की सियासी सूरते हाल अभी तक शशोपंज की कैफ़ियत बनी हुई है और इसकी वजह से इराक़ में एक अजीब सा आलम है। वहाँ एलेक्शन हुए पाँच महीने हो चुके हैं लेकिन कोई भी इत्तेहाद, हुकूमत बनाने की पोज़ीशन में नहीं है, इसलिए अमरीकियों के और ज़्यादा मज़े हैं वह ऐसी सूरते हाल का भरपूर फ़ायदा उठा रहे हैं।

जहाँ तक दहशतगर्दी का सवाल है तो वह अपनी जगह जारी है। सख़्त चौकसी और कड़े हिफ़ाज़ती बन्दोबस्त के बावजूद कहीं न कहीं धमाके करने में दहशतगर्द कामयाब हो जाते हैं। यहाँ चौकसी का ये आलम है कि मुर्दों तक को Explosive Detector से गुज़ारा जाता है। नजफ़ कर्बला और काज़मैन में ये आम रवाज है कि क़ुर्बो जवार में मरने वालों की लाशों को दफ़्न किए जाने से पहले अक़ीदतन रौज़ों के अन्दर ले जाया जाता है लेकिन दहशतगर्दी की बढ़ती हुई कारवाइयों की वजह से यहाँ लाई जाने वाली लाशों को रौज़े के बाहर ही कांधे से उतार कर रख दिया जाता है फिर फ़ौजी जवान Explosive Detector लेकर आते हैं और मुर्दे की जाँच करते हैं और मुर्दे को कांधा देने वालों की भी जांच की जाती है लेकिन कोई बुरा नहीं मानता न तो कांधा देने वाले न मुर्दे के वरसा, क्योंकि सब जानते हैं कि अब इराक़ में ज़िन्दा रहने के लिए ये लाज़मी हो गया है कि मुर्दों की भी जामा तलाशी हो।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 4 अगस्त 2010ई०)

कब ख़त्म होगा वादि-ए-नूर पे छाया सितम का अंधेरा

मुझे इराक़ से वापस आए हुए हफ़्ते से ज़्यादा हो गया लेकिन अभी तक वहाँ की ख़ुश्बू मेरे एहसास पर छाई हुई है। इराक़ियों की ज़बरदस्त मेहमान नवाज़ी और मिलनसारी ने दिलो दिमाग़ पर ऐसे नुक़ूश छोड़े हैं कि जो तमाम उम्र मेरे साथ रहेंगे। मेहमान नवाज़ी और ख़ुशअख़लाक़ी का ये नमूना एक ऐसे आलम में देखने को मिला, जबकि मुल्क में हर तरफ़ अद्मे तहफ़्फ़ुज़ की फ़िज़ा है, बमों के धमाकों का कभी न ख़त्म होने वाला सिलसिला जारी है, क़दम-क़दम पर फौज और पुलिस के अफ़सर तलाशी के लिए मौजूद हैं और महंगाई ने आम आदमी का नातक़ा बन्द कर रखा है। वैसे तो हमारी मेहमान नवाज़ी के लिए इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े की मैनेजिंग कमेटी "अतबतुल हुसैनिया" के चीफ़ मोहतमिम सईदुद्दीन साद और हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़े "अतबतुल अब्बासिया" के इंजीनियर सुलाल हर वक़्त मौजूद थे, लेकिन इसके बावजूद कुछ दूसरे इराक़ी ऐसे थे, जो हिन्दुस्तानी वफ़्द की दावत करने को बेताब थे। इन ही में से एक थे इराक़ी फ़ौज की सरीउल हरकत फ़ोर्स के मेजर जनरल अदनान। मेजर जनरल अदनान से हमारा तआरुफ़ हज़रत अब्बास[अ०] के रौज़े पर मुनअक़िद होने वाली इस तक़रीब में हुआ था, जिसमें 108 किलो सोने की प्लेटों से बनाए गए नए मीनारों का इफ़्तेताह होने वाला था।

इन मीनारों पर बहुत ही ख़ूबसूरत अन्दाज़ में क़ुरआन की आयात तहरीर की गई हैं और बीच में ख़ते कूफ़ी में पंजतन के नाम तहरीर हैं। इन मीनारों को देखकर लगता था कि जैसे दुआ के लिए दो हाथ बलन्द

हो गए हैं, जो अल्लाह तआला से दुआ कर रहे हैं कि ऐ रब्बे करीम इस मुक़द्दस सरज़मीन को ज़ालिमों से नजात दे। मेजर जनरल अदनान ने हम लोगों के एज़ाज़ में एक होटल में एक शानदार ज़ियाफ़त का एहतेमाम किया। मेजर अदनान को इराक़ के लोग काफ़ी एहतेराम की नज़र से देखते हैं, इनका सबसे बड़ा कारनामा ये माना जाता है कि उन्होंने 2007 में कर्बला के मुक़द्दस शहर में उस मुमकिना ख़ून-ख़राबे को रोकने में बहुत अहम रोल अदा किया था, जो मुक़तदा सद्र की महदी मलेशिया और इराक़ी अफ़वाज के दरमियान होने वाला था। इस वाक़िए की तफ़सील यूँ बयान की जाती है कि महदी मलेशिया के सैकड़ों हथियारबन्द सिपाही इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े की ज़ियारत के लिए पहुँचे तो वहाँ मौजूद हिफ़ाज़ती अमले ने उन से कहा कि वह हथियार रख के अन्दर जाएं, क्योंकि रौज़ों के अन्दर किसी को भी हथियार ले जाने की इजाज़त नहीं (यहाँ तक कि इराक़ी अफ़वाज और मुसल्लह पुलिस के मेम्बरान भी अपने हथियार बाहर ही छोड़कर रौज़े में दाख़िल होते हैं) मुक़तदा सद्र के लोगों ने इस शर्त को मानने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनको डर था कि अगर उन्होंने हथियार रख दिए तो चन्द लम्हों में अमरीकन फ़ौजी उनको घेर कर ख़त्म कर देंगे। जैसा कि क़ारेईन (पाठक) जानते हैं कि इराक़ पर अमरीकी हमले के बाद सिर्फ़ मुक़तदा सद्र ही एक ऐसे मज़हबी रहनुमा थे, जिन्होंने जारेह फ़ौज के साथ ज़बरदस्त मारका आराई की थी। यहाँ तक कि नजफ़ अशरफ़ में जब वह पनाहगुज़ीं थे तो अमरीकी फ़ौजियों ने वहाँ भी धावा बोल दिया था और हज़रत अली[अ०] के रौज़े पर भी गोलाबारी शुरु कर दी थी, जिसके बाद शियों के मरजए तक़लीद आयतुल्लाह सीस्तानी[म०ज़ि०] ने मुदाख़ेलत करके मुक़तदा सद्र की मलेशिया को नजफ़ अशरफ़ ख़ाली करने के लिए कहा था। अमरीकियों की नज़र में इराक़ में उनके सबसे बड़े दुश्मन मुक़तदा सद्र ही बाक़ी रह गए थे और इन ही के मलेशिया के लोग कर्बला में इमाम हुसैन[अ०] को ख़िराजे अक़ीदत पेश करने के लिए पहुँचे थे। एक तरफ़ रौज़े में दाख़ले के उसूल थे और दूसरी जानिब मुक़तदा सद्र की मलेशिया के तहफ़्फ़ुज़ का मामला था। हालात इतने बिगड़ गए कि दोनों तरफ़ से हवाई फ़ायर होने लगे और रौज़े के आसपास के इलाक़ों में ज़बरदस्त भगदड़ मच गई। ऐसे नाज़ुक मौक़े पर मेजर जनरल अदनान ने बहुत ही समझदारी के साथ मुआमलात को संभाल लिया और दोनों फ़ौजों के बीच टकराव की नौबत नहीं आई। अब मुक़तदा सद्र ने मुसल्लह जिद्दोजेहद तर्क कर दी और मुल्क के जमहूरी निज़ाम में शामिल हो गए हैं। पार्लिमेण्ट में उनके एलाइंस को 70 सीटें मिली हैं और ख़ुद उनकी पार्टी सदर मूवमेन्ट को 40 नशिस्तें हासिल हुई हैं।

इराक़ के दौरे के दरमियान मुझे महसूस हुआ कि कर्बला और उसके आसपास के इलाक़ों में मुक़तदा सद्र की काफ़ी मुख़ालेफ़त है, जबकि कूफ़ा और बग़दाद में उनको अवाम की ज़बरदस्त हिमायत हासिल है। नजफ़ में भी उनका ख़ास असर है, लेकिन उनके मुख़ालिफ़ीन का भी वहाँ ज़ोर है। असल में मुक़तदा सद्र को अमरीकन बहुत ज़्यादा नापसन्द करते हैं, और चाहते हैं कि किसी भी तरह मुक़तदा सद्र को मसनदे इक़्तेदार से दूर रखा जाए। इसके अलावा अमरीकी हुक्काम की भी ये कोशिश है कि आयतुल्लाह मोहसिनुल हकीम के पोते अम्मारुल हकीम की पार्टी नेशनल इराक़ी एलाइंस को भी इक़्तेदार से महरूम रखा जाए, क्योंकि ये दोनों लोग ही ईरान के इस्लामी इन्क़ेलाब से मुतास्सिर हैं, और अमरीका इराक़ में किसी दूसरे इस्लामी इन्क़ेलाब को पनपते नहीं देख सकता। अमरीकियों की तरफ़ से मुसलसल मुदाख़लत के बाइस इराक़ में पाँच महीने गुज़र जाने के बावजूद अभी तक हुकूमत की तश्कील नहीं हो सकी है। अभी हाल में ही अमरीका के सदर बाराक हुसैन ओबामा ने एक ख़त भेजकर इराक़ में नई हुकूमत की तश्कील के सिलसिले में इराक़ के सबसे बड़े मज़हबी रहनुमा आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यद अली हुसैनी सीस्तानी[म०ज़ि०] से मदद माँगी। आयतुल्लाह सीस्तानी एक ऐसे आलिमे दीन हैं जिन्होंने ख़ुद को हमेशा सियासत से अलग रखा है। सद्दाम के दौर में वह इसी लिए हुकूमत के इताब से महफ़ूज़ रहे कि उन्होंने सियासत में मुदाख़लत नहीं की। वह एक सादा सी ज़िन्दगी गुज़ारने

वाले रूहानी रहनुमा हैं। हर साल करोड़ों रुपये उनके पास खुम्स और सहमे इमाम[अ०] के नाम पर आते हैं, जिसके ज़रिए वह दुनिया भर में चल रहे फ़लाही इदारों की मदद करते हैं, लेकिन खुद उनके पास अपना कोई मकान नहीं है नजफ़ की एक पतली से गली में एक किराए के मकान में सीस्तानी साहब रहते हैं। घर में मामूली क़ालीन और रूई के गद्दे बिछे हुए हैं, जिस पर दुनिया के आला तरीन लोग भी आकर बैठते हैं। ग़िज़ा निहायत सादा है और उनके शार्गिद ने तो ये बताया कि उनके कान्धों पर पिछले बारह साल से एक ही अबा है जिसको वह धो-धोकर पहनते हैं, लेकिन इस सादगी से उनकी शान में कोई कमी नहीं आती, बल्कि वक़ार में मज़ीद इज़ाफ़ा होता है। ये भी उनकी आला ज़रफ़ी है कि मुल्क पर क़ाबिज़ अमरीकी फ़ौज के अफ़सरों या अमरीकी हुक्काम से आज तक उन्होंने मुलाक़ात नहीं की। उनके नाम बराक ओबामा के ख़त के मुख़तलिफ़ मतालिब निकाले जा रहे हैं, कुछ लोगों का कहना है कि अमरीका मुक़तदा सद्र और अम्मारुल हीकम को अलग-थलग करने की ग़रज़ से आयतुल्लाह सीस्तानी को बीच में ला रहा है, लेकिन इराक़ के आम लोगों का ख़याल है कि आयतुल्लाह सीस्तानी इस मामले में अभी भी मदाख़लत नहीं करेंगे और ख़ासकर अमरीका के सदर की अपील पर तो वह बिल्कुल ध्यान नहीं देंगे, क्योंकि ऐसा करना उनकी शान के ख़िलाफ़ होगा।

मेरे ख़याल में आयतुल्लाह सीस्तानी नई हुकूमत की तश्कील में कोई रोल भले ही अदा न करें, लेकिन इसमें कोई हरज नहीं है कि वह मुख़तलिफ़ सियासी धड़ों के बीच मसालेहत करवाने की कोशिश करें और एक ऐसी क़ौमी हुकूमत बनने का रास्ता हमवार करें, जिसमें सब ही सियासी पार्टियों के लोग शामिल हों। इस वक़्त इराक़ के हालात बहुत धमाकाख़ेज़ हैं, लॉ-क़ानूनियत उरूज पर है और सियासी अद्मे इस्तेहकाम का फ़ायदा मुल्क दुश्मन अनासिर उठा रहे हैं। अमरीकी सदर बराक ओबामा ने इक़्तेदार संभालने के बाद जार्ज बुश की पॉलीसियों से इन्हेराफ़ की अलामत के तौर पर ये एलान कर दिया था कि वह इराक़ में मौजूद फ़ौजों की तादाद में इस साल के आख़िर तक पचास हज़ार की कमी कर देंगे और 2011[ई०] में इराक़ से अमरीकी फ़ौजें पूरी तरह हट जाएंगी, लेकिन इराक़ी अवाम का यही मानना है कि अमरीकी इराक़ से कभी नहीं जाएंगे, इसलिए मुमकिन है कि इराक़ के ख़राब और तश्वीशनाक हालात का बहाना बनाकर अमरीकी सदर अपने वादे से मुकर न जाएं? इराक़ के लोगों का ये भी मानना है कि अमरीका के साबिक़ सदर जार्ज बुश और मौजूदा सदर बराक हुसैन ओबामा की पॉलीसियों में कोई फ़र्क़ नहीं है, बस फ़र्क़ इतना है कि बुश को अपनी बात मनवाने के लिए फ़ौजी मुहिम पर यक़ीन था और ओबामा थोड़ी नर्मी के साथ उसी पॉलीसी को आगे बढ़ा रहे हैं, जिसका सिर्फ़ एक ही मक़सद है कि इराक़ के अवाम को लूटा खसोटा जा सके। हर इराक़ी बाशिन्दा आज यही सोच रहा है कि कब ख़त्म होगा सितम का ये सियाह दौर और कब वापस जाएंगी अमरीकी फौजें?

इराक़ में हमारी मेहमान नवाज़ी करने वालों में फ़लाह नाम के नौजवान बहुत पेश-पेश थे, जिनसे हमारे दोस्त आग़ा सुलतान के देरीना ताल्लुक़ात हैं। इनके वालिद का एक शानदार होटल है। इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े से एक किलोमीटर के फ़ासले पर उनका शानदार बंगला है, जहाँ अंगूर की बेलें और खजूर के दरख़्त बहुत बड़ी तादाद में हैं। फ़लाह ने अपने घर में दावत की तो ये भी दिखाया कि खजूर के बलन्द क़ामत दरख़्तों पर किस तरह चढ़कर खजूरें तोड़ी जाती हैं। फ़लाह ने मेरे लेपटाप से ख़बरें और मज़ामीन भेजने के लिए इण्टरनेट कनेक्शन का इन्तेज़ाम किया, जिसके सबब मुझे बेहद आसानी हो गई और मैं अपने क़ारेईन (पाठकों) के साथ मुसलसल राब्ते में रह सका। इनके अलावा बग़दाद के एक दोस्त मजीद ने भी ज़बरदस्त मेहमान नवाज़ी का सुबूत दिया और 'बलद' में वाक़े इमाम अली नक़ी[अ०] के बेटे सै० मुहम्मद मज़ार की निगराँ कमेटी के लोगों ने भी इस क़दर ख़ातिर की हमारे पास शुक्रिये के लिए अलफ़ाज़ कम पड़े।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 11 अगस्त 2010[ई०])

□□□

मुख्य समाचार

इन्हेदामे जन्नतुल बक़ी को लेकर क़ाएदे मिल्लत की क़यादत में हज़रतगंज, लखनऊ में अज़ीमुश्शान एहतेजाजी जल्सा व जुलूस

18 सितम्बर 2010ई०/8 शव्वाल 1431हि० सनीचर को हज़रतगंज लखनऊ में क़ाएदे मिल्लत की क़यादत में एहतेजाजी जल्सा इमामबाड़ा सिब्तैनाबाद में हुआ। सदारतकी तक़रीर में क़ाएदे मिल्लत ने बिदअत पर बहस की और बताया कि जो लोग, ये बिदअत वह बिदअत कह रहे हैं वह कितना कुछ बिदअत कर रहे हैं, मौलाना ने बताया कि आज सऊदी हुकूमत ईसाईयों और यहूदियों के टूटे हुए इबादतख़ाने और मरकज़ों को बनवा रही है नीज़ मौजूद इमारतों की हिफ़ाज़त कर रही है लेकिन अफ़सोस है कि रसूलस० की बेटी और नवासोंअ० के रौज़ो को मिसमार कर चुकी है और नहीं बनने दे रही हैं।

मौलाना ने कुछ आगे चलकर अपनी तक़रीर में फ़रमाया कि वहाबी, अमरीका और इस्राईल इस वक़्त शियों को अपना निशाना बनाए हुए हैं। सबसे ज़्यादाशियों के ख़िलाफ़ प्रोपेगण्डा किया जा रहा है, तीन सौ सेटलाइट, चालीस हज़ार इण्टरनेट वेबसाइटस और कई करोड़ किताबें शियों के ख़िलाफ़ काम कर रही हैं। मौलाना ने कहा कि अमरीका मुस्लिम दोस्त होने का प्रोपेगण्डा कर रहा है लेकिन वह वहाबियों और अपने मुस्लिम एजेन्टों का दोस्त है न कि शियों का। क़ाएदे मिल्लत ने फ़रमाया कि अगर आइन्दा साल तक जन्नतुल बक़ी की तामीर नौ न होगी तो आइन्दा इसी तारीख़ को पूरे हिन्दुस्तान के मोमिनीन लखनऊ पहुँच कर इस से बड़ा एहतेजाजी जुलूस निकालेंगे।

इसके बाद वहाँ मौजूद पूरा मजमा इमामबाड़ा सिब्तैनाबाद के गेट पर मातम करने लगा और क़ाएदे मिल्लत की सरपरस्ती में वहाँ से इमामबाड़ा शाह नजफ़ की तरफ़ जुलूस की सूरत में चल दिया इस दरमियान लब्बैक या ज़हरा, लब्बैक या हुसैनअ०, हुसैनियत ज़िन्दाबाद, यज़ीदियत मुर्दाबाद के फलक शिगाफ़ नारों और मातम से ऐसा महसूस हो रहा था कि पूरा लखनऊ मातमकदा बन चुका है, जहाँ तक नज़र जा रही थी मोमिनीन का हुजूम देखने वाले दूसरे लोगों में भी ज़ुल्म और ज़ालिम के ख़िलाफ़ जोश व वलवला पैदा कर रहा था।

वाज़ेह रहे कि अब से तक़रीबन 84 बरस पहले सऊदी हुकूमत के ज़रिए जन्नतुल बक़ी मिसमार किए जाने का शर्मनाक वाक़िआ पेश आया था। इसके बाद पूरी दुनिया में इस हादसे के ख़िलाफ़ आवाज़े एहतेजाज बलन्द होने लगी ख़ासकर लखनऊ में तो इस सिलसिले में एहतेजाज के लिए ख़ानदाने इज्तेहाद के नामवर आलिम उमदतुल उलमा मौलाना सै० कल्बे हुसैन साहब और दूसरे उलमा ने इन्हेदामे जन्नतुल बक़ी (जिसमें ख़ास तौर पर रसले अकरमस० की बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरास० और इमामों के रौज़ों को मिसमार कर देने पर) के ग़म में इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब से इमामबाड़ा झाऊलाल तक एक तारीख़ी जुलूस निकाला था जबकि हुकूमते वक़्त इस जुलूस की भरपूर मुख़ालिफ़त कर रही थी और 8 शव्वाल को इमामबाड़ा नाज़िम साहब से एक जुलूसे ग़म उमदतुल उलमा की क़यादत में इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब तक आया, फिर एक ज़माने तक ये जुलूस निकलते रहे, जब लखनऊ के जुलूसे ग़म बन्द हो गए तो अब 8 शव्वाल को सिर्फ़ मजलिसे ग़म होने लगी और सफ़र के पहले इतवार को अब भी ये ग़म बसिलसिल-ए-इन्हेदामे जन्नतुल बक़ी मनाया जाता है जिसमें पूरा लखनऊ शरीक होता है, हाँ अब ये जुलूसे ग़म इमामबाड़ा झाऊलाल के क़रीब मस्जिद से बरामद होता है और क़ाएदे मिल्लत की मजलिस पर तमाम होता है।

इसके अलावा इस ख़ानदान के उलमा ने इस ज़ुल्म के ख़िलाफ़ अपनी तहरीरों से भी एहतेजाज किया, और मुस्तक़िल किताबें तसनीफ़ कीं, क़ाएदे मिल्लत ने इस बार फ़ैसला लिया कि इस मौक़े पर अब बड़े पैमाने पर एहतेजाज किया जाए चुनानचे इस बार पूरा लखनऊ महसूस हो रहा था कि सरापा एहतेजाज बन गया है। इस जुलूस में मर्दों के अलावा ख़वातीन की भी बड़ी तादाद मौजूद थी और अमरीका मुर्दाबाद, इस्राईल मुर्दाबाद, आले सऊद मुर्दाबाद, सऊदी हुकूमत मुर्दाबाद के नारों से लखनऊ गूँज रहा था।

ध्यान रहे कि हुकूमते इमामिया अवध के ख़ात्मे के बाद से आज तक हज़रतगंज में ये पहला मातमी जुलूस है। इस अज़ीम एहतेजाज (जिसमें पचास हज़ार से ज़्यादा का मजमा था, जबकि दस हज़ार का मजमा तो दो दिन पहले दरगाह हज़रत अब्बास के जलसे में था जो इस एहतेजाज की तमहीद की सूरत में हुआ था) के अलावा शहर के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर भी एहतेजाज हुए। चन्द जगहों पर दस से पन्द्रह तक लोग शरीक रहे, सिर्फ़ शहीद स्मार्क पर तक़रीबन पाँच सौ का मजमा देखा गया ये लोग असल मुजरिम अमरीका और इस्राईल के मज़ालिम पर वैसे ही पर्दा डालने की कोशिश करते हैं जैसे वहाबी लोग कर्बला के असल मुजरिम यज़ीद को बचाने की कोशिश ये कहकर करते हैं वह तो शाम में था क़िताल के असल ज़िम्मेदार तो शिम्र और उमरे साद वग़ैरा हैं।

शबीह रौज़ा नजफ़ में जुलूस पहुँच कर मजलिस में तबदील हुआ जिसे क़ाएदे मिल्लत ने ख़िताब किया। मजलिस में जन्नतुल बक़ी की तारीख़ पेश की गई और हज़रत ज़हरा के मसाएब पर ख़त्म हुई।

आयतुल्लाह ख़ामेना-ई म०ज़ि० ने ईदे फ़ित्र के ख़ुतबे में इस्लाम के मसाएल का तज़किरा किया

इस्लामी जमहूरिया ईरान, ईदे फ़ित्र के दिन नूर व रौशनी और मुनाजात व इबादत का पैकर बन गया और ईरान के बाईमान अवाम ने एक महीने की रोज़ादारी और इबादत व परसतिश के बाद अल्लाह तआला से मुहम्मद व आले मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम की तमाम नेकियों और हसनात को बतौर ईदी तलब किया।

अज़ीम क़ौमी व दीनी मुनासिबत से तेहरान की वहदत परस्त अवाम ने क़ाएदे इन्क़ेलाबे इस्लामी आयतुल्लाहिल उज़्मा सै० अली ख़ामेना-ई की इमामत में ईदे फ़ित्र की नमाज़ अदा की। क़ाएदे इन्क़ेलाबे इस्लामी ने नमाज़ के ख़ुत्बों में उम्मते इस्लामिया और अज़ीम मिल्लते ईरान को ईदे फ़ितर की मुबारकबाद पेश की और माहे रमज़ान से बहरामन्द होने के मौक़े पर बहुत बड़ी नेमत क़रार दिया और सबको इस अज़ीम नेमत की क़दरदानी और माहे रमज़ान से हासिल होने वाले गराँक़द्र मानवी सरमाए की हिफ़ाज़त की दावत दी।

आप ने अलग-अलग रफ़्तार व गुफ़्तार और मिज़ाज व पसन्द के मुख़्तलिफ़ तबक़ात और ख़ास तौर पर नौजवानों की ज़िक्रो इबादत की महफ़िलों में शिरकत को अल्लाह तआला से इन्सानों की फ़ितरी व ज़ाती मुहब्बत का दिलकश नज़ारा क़रार दिया और फ़रमाया कि ईरान के बा-ईमान अवाम अल्लाह तआला से माहे रमज़ान में क़ाएम होने वाले राब्ते की हिफ़ाज़त और रिश्ते की तक़वियत के ज़रिए अपने अन्दर उरूज व तकामुल की बुनियादों को मज़बूत करेंगे और ऐसी क़ौम तमाम माद्दी व मानवी मैदानों में हमेशा कामयाबी से हमकिनार रहेगी। क़ाएदे इन्क़ेलाबे इस्लामी ने नमाज़े ईद के दूसरे ख़ुतबे में माहे रमज़ान में मुख़्तलिफ़ अवामी तबक़ात, जिनमें से तलबा, हुक्काम, मुलाज़मीन, सरमाया कारों, और दूसरे तबक़ात के लोगों से अपनी मुलाक़ातों का हवाला देते हुए फ़रमाया कि ईरान की बलन्द हिम्मत, पुरअज़्म और जोश व जज़्बे से सरशार क़ौम हतमी तौर पर तरक़्क़ी व पेशरफ़्त और इफ़्तेख़ार व इज़्ज़त की तमाम बलन्दियों को सर करेगी। क़ाएदे इन्क़ेलाबे इस्लामी ने यौमे क़ुद्स की मुनासिबत से मिल्लते ईरान की शानदार रैलियों को इसी अज़्म व इरादे की जलवागाह क़रार दिया और फ़रमाया कि इस्लाम और इमाम (ख़ुमैनी रहमतुल्लाह अलैह) के दुश्मन गुज़श्ता इक्तीस बरसों में यौमे क़ुद्स से अवाम की दिलचस्पी में कमी देखने के मुतमन्नी थे लेकिन ईरान की वक़्त शनास क़ौम ने इस साल एशिया, मश्रिक़े वुस्ता, अफ़्रीक़ा, यूरोप और अमरीका के मुसलमानों के दरमियान सबसे पेश-पेश और ज़्यादा जोश व जज़्बे के साथ मैदान में क़दम रखे। क़ाएदे इन्क़ेलाबे इस्लामी के बक़ौल मसल-ए-फ़िलिस्तीन को ताक़ की ज़ीनत बना देने की अमरीका और इस्राईल के दूसरे हामियों की कोशिशों और इस्राईल के मुजरिमाना इक़दामात के बाइस मिल्लते ईरान में यौमे क़ुद्स के जुलूसों में भी शिरकत का जज़्बा और भी क़वी होगा। क़ाएदे इन्क़ेलाबे इस्लामी ने मसल-ए-फ़िलिस्तीन को आलमे इस्लाम का सबसे बड़ा मसला क़रार दिया और सहयूनियों के जराएम और ग़ज़्ज़ा व मग़रिबी उर्दुन में फ़िलिस्तीनियों के ख़िलाफ़ उनकी वहशियाना कारवाईयों के सिलसिले का हवाला देते हुए फ़रमाया कि मिल्लते फ़िलिस्तीन के दुश्मन और जारेह सहयूनियों के हामी अफ़राद ने इन जराएम पर पर्दा डालने के लिए वाशिंगटन में इजलास किया और उसका नाम आश्ती कान्फ्रेंस रख दिया लेकिन सवाल ये है किस से आश्ती? मक़बूज़ा फ़िलिस्तीन के हक़ाएक़ को मद्देनज़र रखते हुए क्या बुनियादी तौर पर इस आश्ती का कोई मफ़हूम है? क़ाएदे इन्क़ेलाबे इस्लामी ने बैतुलमुक़द्दस को यहूदी शहर का रंग देने की साज़िश को बहुत बड़ा जुर्म क़रार दिया और उस पर सहयूनियों के इसरार का हवाला देते हुए फ़रमाया कि मुसलमान क़ौमों और हुकूमतों को चाहिए कि इस साज़िश के जवाब में अपने संगीन फ़रीज़े पर अमल करें। आपने सहयूनी हुकूमत और उसके हामियों के शदीद दबाव और साज़िशों के मुक़ाबले में मिल्लते फ़िलिस्तीन की इस्तेक़ामत व पायदारी की तारीफ़ करते हुए फ़रमाया कि आज मिल्लते फ़िलिस्तीन किसी भी दूसरे दौर से ज़्यादा पुरअज़्म और साबित क़दम नज़र आ रही है।

मुत्तहिद होकर मनाएं यौमुल क़ुद्स: क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद म०ज़ि०

क़िब्ल-ए-अव्वल की बाज़याबी और फ़िलिस्तीन के बेगुनाह अवाम पर इस्राईली मज़ालिम के ख़िलाफ़ 3 सितम्बर 2010ई० मुताबिक़ 23 रमज़ानुल मुबारक 1431ई० को बड़े इमामबाड़े में क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद की सरबराही में यौमे क़ुद्स मनाया गया। इस मौक़े पर बाद नमाज़ जुमा मस्जिद जामे आसिफ़ी से जुलूस की सूरत में मोमिनीन हुसैनिया आसिफ़ी तक आए और मुनअक़िदा जलसा से ख़िताब करते हुए क़ाएदे मिल्लत ने फ़रमाया कि तक़रीबन तीस बरस क़ब्ल आयतुल्लाह ख़ुमैनीरह० ने रमज़ान के आख़िरी जुमे को यौमे क़ुद्स क़रार देते हुए पूरी दुनिया के मुसलमानों से मुत्तहेद होकर क़िब्ल-ए-अव्वल की बाज़याबी के तौर पर मनाने की अपील की थी। इसी पर अमल करते हुए आज पूरी दुनिया में मुसलमान यौमे क़ुद्स मनाते हैं।

क़ाएदे मिल्लत ने इस मौक़े पर इस्राईल की जानिब से फ़िलिस्तीनी मुसलमानों पर होने वाले मज़ालिम का पर्दा फ़ाश किया। मौलाना ने आयतुल्लाह ख़ुमैनीरह० के हवाले से कहा कि अगर मुसलमान मुत्तहिद होकर इस्राईल पर एक-एक बाल्टी पानी फेंकें तो उसका वजूद मिट जाएगा। अगर मुसलमान मुत्तहेद होकर यौमे क़ुद्स मनाएं तो फ़िलिस्तीनी अवाम के मसाएल हल हो जाएंगे और साथ ही क़िब्ल-ए-अव्वल भी इस्राईल के नापाक क़ब्ज़े से आज़ाद हो जाएगा।

अमरीकी सफ़ारतख़ाने की तरफ़ से मुनअक़ेदा इफ़्तार पार्टी के ख़िलाफ़ एहतेजाज

8 सितम्बर 2010ई० अमरीकी सफ़ारतख़ाने की जानिब से होटल क्लार्कस अवध लखनऊ में हो रहे इफ़्तार के वक़्त ज़बरदस्त एहतेजाज हुआ जैसे ही ये इत्तेला क़ाएदे मिल्लत से मुताल्लिक़ हुसैनी टाइगर्स के जवानों को मिली वह फौरन वहाँ पहुँचे और क्लार्क अवध के सामने अमरीकी झण्डे नज़्रे आतिश किए और यहूदी ब्राण्ड कोकाकोला और पेप्सी को सड़क पर फोड़कर अमरीका और इस्राईल के ख़िलाफ़ नारेबाज़ी की। पुरअम्न एहतेजाज जारी था कि इस दौरान ए०डी०एम मश्रिक़ी आर०के० पाण्डेय ने वहाँ जो लोग एहतेजाज कर रहे थे उनके हाथों में रहबरे इन्क़ेलाबे इस्लामी-ए-ईरान आयतुल्लाह ख़ुमैनी और आयतुल्लाह ख़ामेना-ई की तस्वीरें थीं जब पुलिस ने इन तस्वीरों को छीनकर फाड़ने की कोशिश की इस पर हुसैनी टाइगर्स ने नौजवान भड़क उठे और पुलिस से झड़प हो गई। पुलिस ने इन एहतेजाज करने वालों को गिरफ़्तार कर लिया जैसे ही इसकी ख़बर क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब को हुई तो वह फ़ौरन सीधे पुलिस लाइन गए, और पुलिस लाइन में इन नौजवानों को नमाज़ पढ़ाई और अफ़्तार किया, क़ाएदे मिल्लत ने वहाँ मौजूद मीडिया से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि एक तरफ़ तो अमरीका और इस्राईल इस्लाम को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं और दूसरी तरफ़ मक्कार फ़ितरत के ये लोग इस इफ़्तार पार्टी का एहतेमाम कर रहे हैं जब क़ाएदे मिल्लत ने मुतालबा किया कि लाठीचार्ज कराने वाले ए०डी०एम० को बरख़्वास्त किया जाए। डी०आई०जी० ने क़ाएदे मिल्लत को यक़ीन दिलाया तो कि क़ुसूरवारों के ख़िलाफ़ कड़ी से कड़ी कारवाई की जाएगी। वाज़ेह रहे कि लखनऊ के बिक जाने वाले नाम नेहाद उलमा पर अमरीका और इस्राईल की भरपूर नज़र है चुनानचे चन्द बरसों में पुराने लखनऊ की दो क़दीमी दीनी दर्सगाहों में कई बार अमरीकन सफ़ीर और दूसरे ओहदेदारों का ख़ैर मक़दम और उनकी ज़ियाफ़त हो चुकी है और हर साल कई-कई बार अमरीकी सफ़ारतख़ाने के ओहदेदार लखनऊ के बड़े-बड़े होटलों में आके रुकते हैं और शहर के ज़मीर फ़रोश बल्कि ईमान फ़रोश टुकड़गदे ज़ाकिर, अमरीकन एजेन्ट बड़े-बड़े मुस्टण्डे मोलवियों के हुक्म पर उनकी मेहमान नवाज़ी के फ़राएज़ अदा करते रहते हैं, अबकी तो बिल्ला बोरे से बाहर भी निकल आया 17 मार्च 2010ई० मुताबिक़ 30 रबीउलअव्वल 1431हि० को शिया पर्सनल लॉ बोर्ड के चेयरमैन और दसरे ओहदेदारान अमीरीकी सफ़ीर बराए हिन्द "तमूथी जे रोएमर" को शिया कालेज और दूसरे मदारिस में भी ये बताने के लिए ले गए कि ये सब आपके मुक़ल्लिदीन हैं। तस्वीर 17 मार्च 2010ई० के रोज़नामा 'सहाफ़त' के पेज 3 पर देखी जा सकती है।

याद रहे कि 17 मार्च 2010ई० से चन्द माह पहले यानी पहली दिसम्बर 2009ई० को सुन्नी ईदगाह के नायब इमाम और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के नायब सदर ने (मुताबिक़ ख़बर सहाफ़त 31 जनवरी 2010ई०) इस्राईली सफ़ारतख़ाने की सेकेण्ड सेक्रेट्री से ख़ुफ़िया मुलाक़ातें कीं बाद में मौलाना उन्हें रोज़नामा "आग" के दफ़्तर ले गए जहाँ सेकेण्ड सेक्रेट्री ने रोज़नामे की पॉलीसियों की तारीफ़ भी की लेकिन ये भी ज़हन में रहे कि उनके असल मेज़बान शिया पर्सनल लॉ बोर्ड के अरकान ही थे जो अमरीकन ओहदेदारों की मेज़बानी के कर्ता-धरता लखनऊ बल्कि हिन्दुस्तान में हैं।

बक़ौल शमील शम्सी साहब प्रिसिडेन्ट ऑफ "हुसैनी टाइगर्स", इस इफ़्तार पार्टी में भी चन्द मदारिस के आला ओहदेदारान व मुदर्रिसीन और शिया पर्सनल लॉ बोर्ड के ओहदेदारान क्लार्क अवध के क़रीब पहुँच कर अपने घरों की तरफ़ भाग लिए जैसे अमरीकन सफ़ीर और सफ़ारतख़ाने के दूसरे ओहदेदारान नाम नेहाद इफ़्तार पार्टी से फ़रार इख़्तियार कर गए। अख़बारात के मुताबिक़ किसी आयतुल्लाह की हिन्दुस्तान में वकालत के फ़राएज़ अन्जाम देने वाले, मौलाना आसिफ़ भी अमरीकन इफ़्तार पार्टी में शरीक थे बल्कि मेज़बान की हैसियत से भी नज़र आ रहे थे।

ईरान पर हमला हुआ तो इस्राईल को तबाह कर देंगे: डॉ० महमूद अहमदी नेजाद

ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने इस्राईल के ख़िलाफ़ अपना पुरअज़्म रवैय्या बरक़रार रखते हुए कहा कि उनके मुल्क पर हमला होने की सूरत में इस यहूदी रियासत को मुकम्मल तौर पर तबाह व बर्बाद कर दिया जाएगा। ख़लीजी मुल्क क़तर के दौरे पर सदर अहमदी नेजाद ने वहाँ एक प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि ईरान पर कोई भी हमले का मतलब होगा कि इस्राईल का दुनिया के नक़्शे से ख़ात्मा। उन्होंने कहा कि 'मौजूदा हालात में इस्राईल और अमरीका ईरान पर हमला नहीं कर पाएंगे। हालांकि ये उनकी चाहत है। लेकिन अगर ऐसा होता है तो दुनिया के नक़्शे से इस यहूदी रियासत का वजूद ही ख़त्म हो जाएगा।' ये कोई पहला मौक़ा नहीं है जब राष्ट्रपति अहमदी नेजाद ने इस्राईल के ख़ात्मे की धमकी दी है। वह पहले भी कई बार इस्राईल को वारनिंग दे चुके हैं कि ईरान पर हमला करने का उसका कोई भी मन्सूबा उसके ख़िलाफ़ होगा। ईरान का कहना है कि उसका न्युकिलियाई प्रोग्राम पुरअम्न मक़ासिद के लिए है। लेकिन इस वजह से ईरान पर कई पाबन्दियाँ लगाई जा चुकी हैं।